ISSN 2394-4366

Vol. 11 , Issue-41, January-March, 2025

ABHINAV GAVESHNA

(Multi Disciplinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal)

An International Refreed/Peer Reviewed Research Journal of Humanities
Arts, Literature, Culture, Commerce, Science & Social Science

Chief Editor :

Dr. Ranju Kushwaha

Editor :

Dr. Swati Purwar

अभिनव गवेषणा

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

वर्ष- 11, अंक-41, जनवरी-मार्च, 2025

Index

Editorial Board -

Dr. Ranju Kushwaha - Chief Editor- Abhinav Gaveshna (Multi Disciplinary Quarterly International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & Associate Professor & Head, Dept. of Home Science, Juhari Devi Girl's (P.G.) College, Kanpur-208004 (U.P.)

&

Dr. Swati Purwar : Editor - Abhinav Gaveshna (Multi Disciplinary Quarterly International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & Principal, Smt. Buttu Bai Mahavidyalaya Oran Road, Atarra - Banda, 210201 (U.P.)

1-	Service Sector - Growth Engine of Indian Economy	- Dr. Ravi Rastogi	07
2-	Discourse on Girish Karnad in the light of Indian Literature	- Kiran Verma - Dr. Chhaya Malviya	13
3-	Exploring Shakespearean Tragedy : Insights into the Human Condition	- Adiya Verma - Dr. Upasana Bharati	18
4-	Integrated Learning in Higher Education : Bridging the Gap Between Academia and Employment	- Priti Bapu Netke	25
5-	Domestic Violence Against Women : Causes, Consequences and Interventions	- Archana Mishra	28
6-	A Discourse on the Epic Poem Savitri : A Legend and a Symbole by Aurobindo in the Light of Indian Literature	- Ravi Kant Mishra - Dr. Chhaya Malviya	31
7-	प्रभा दीक्षित की कविताओं में स्त्री विमर्श के नये आयाम (विशेष संदर्भ साड़ी उड़ान)	– प्रो. रविन चतुर्वेदी	37
8-	मलिन बस्ती में रहने वाले बालकों की शैक्षिक प्रगति में आधुनिकीकरण, सामाजिक मूल्यों एवं अभिभावकों के व्यक्तित्व, गुणों की भूमिका का अध्ययन	– सुधांशु यादव – डॉ. संजीव कुमार वर्मा	41
9-	उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं जीवन कौशलों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	– अंशी – डॉ. पूनम बाजपेयी	46
10-	प्रारम्भिक बाल्यावस्था में स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर अध्ययन	– लक्ष्मी – डॉ. शिल्पी वर्मा	50

10-	21वी सदी में जे कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता	– पूजा यादव – डॉ. पूनम बाजपेयी	55
10-	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षणिक विचारों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में सम्बन्ध का विवेचनात्मक अध्ययन	– सत्या सिंह – डॉ. विनोद कुमार	60
11-	असहयोग आन्दोलन में संयुक्त प्रान्त तथा बंगाल की महिलाओं का योगदान	– डॉ. ममता नगवार	67
12-	भारतीय परिवेश के विभिन्न विषयों में चाणक्य के राजनैतिक चिन्तन की अवधारणायें व सिद्धान्त	– डॉ. प्रीती सिंह	72
13-	मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में चित्रित जीवन के विविध सन्दर्भ	– डॉ. जुनैद अन्दलीब साजिद	79
14-	रमणिका गुप्ता के कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी नारी की सामाजिक स्थिति	– कु. रागिनी देवी – डॉ. मंजू शुक्ला	88
15-	New Education Policy : शिक्षक शिक्षा के सन्दर्भ में	– प्रो. प्रज्ञा श्रीवास्तव – कु. अंकिता यादव	91
16-	हजारी प्रसाद द्विवेदी का ऐतिहासिक हिन्दी उपन्यासों के विकास में योगदान : एक चिन्तन	– रश्मि शर्मा – संतोष कुशवाहा – वन्दना पटेल	96
17-	वर्तमान में मूल्यपरक शिक्षा की सहरता : एक विश्लेषण	– डॉ. सीमा शर्मा	101
18-	इटावा जनपद की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अभिमुखताओं का अध्ययन	– डॉ. कौशलेन्द्र सिंह	105
19-	डॉ. सुरेश नारायण सक्सेना के चित्रों में सृजनात्मकता के विविध आयाम	– डॉ. पूर्णिमा देवी – डॉ. रेनू धवन	123
20-	शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन : एक समीक्षा	– विपिन सिंह – डॉ. रमेन्द्र तिवारी	131
21-	ग्रामीण क्षेत्र का विकास : एक समन्वित नियोजन	– मो. मतीन	137
22-	वृन्द सतसई में स्त्री विषयक नीतियाँ और उनका मूल्यांकन	– डॉ. अमिता देवी	143
23-	भारतीय समाज में शिक्षा के बदलते स्वरूप एवं शिक्षकों की नयी भूमिका : एक अध्ययन	– डॉ. स्मृति पुरवार	146
24-	जी.एस.टी. में पूर्ति शब्द का अर्थ, आशय व बाह्यपूर्ति एवं आन्तरिक पूर्ति पर कर दायित्व : एक अध्ययन	– प्रो. सुनीत अग्रवाल	149
25-	आचार्य रामानुज के चिन्तन पर वैदिक प्रभाव	– प्रो. अर्चना श्रीवास्तव	154
26-	'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पर्यावरण संरक्षण के सूत्र	– प्रो. (डॉ.) बिन्दु सिंह	157

भारतीय परिवेश के विभिन्न विषयों में चाणक्य के राजनैतिक चिन्तन की अवधारणायें व सिद्धान्त

– डॉ. प्रीती सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर –
राजनीति विभाग,
डी. बी. एस. कालेज,
कानपुर–208006 (उ.प्र.)

ई–मेल:
singhpreeti7284@gmail.com

सारांश

भारतीय चिन्तन में सत्ता तथा पद दोनों का निश्चित का निश्चित स्वरूप उभरा है। सभी व्यक्ति अपने–अपने कार्यों के संदर्भ में समाज में अपना स्थान रखते हैं, जिसके अधिकारों तथा कर्त्तव्यों दोनों का प्रादुर्भाव होता है। भारतीय विचारधारा अधिकारों की तुलना में कर्त्तव्यों की प्रधानता में आस्था रखती है। भारतीय राजनैतिक चिन्तन में व्यक्ति को न केवल समाज तथा राज्य का अंग या सदस्य माना गया है, बल्कि अनेकानेक ऐच्छिक संस्थाओं के सदस्य के रूप में आँका गया है ।

भारत की ऐतिहासिक नगरी आर्यावर्त के शक्तिशाली वैभवशाली, सम्पन्न मगध साम्राज्य के एक गरीब विद्वान ब्राह्मण के परिवार में कौटिल्य का जन्म चणक के यहाँ हुआ। उनका बचपन का नाम विष्णुगुप्त था । पिता चणक का पुत्र होने के कारण उन्हें 'चाणक्य' नाम से जाना गया एवं अपनी कुटिल नीति तथा शासनकाल के विशेष ज्ञान व रुचि के कारण वे कौटिल्य नाम से विख्यात हुये ।

आप ने तक्षशिला विश्वविद्यालय से राजनीति–शास्त्र में शिक्षा प्राप्त की और प्राध्यापक के पद पर आसीन हुए। उस समय के सम्राट चन्द्रगुप्त से परिचय होने पर उन की कुटिल नीति, राजनीति व शासन के विषय में विशेष रुचि के कारण उन्हें मगध साम्राज्य का महामंत्री बनाया। उस समय यवन के सम्राट सैल्यूकस की पराजय के पश्चात् उन की पुत्री हेलेन से चाणक्य का विवाह करा दिया गया एवं इसके पीछे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा यूनान मगध के बीच मैत्री सम्बन्ध को चिरस्थायी करना था।

'राजनीति' का शाब्दिक अर्थ –

राजनीति में 'नीति' शब्द का प्रयोग भारतीय चिन्तन की विशेषता रही है। 'नीति' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'नी' से लिया गया है, इसलिए इस का शाब्दिक अर्थ है 'निरीक्षण' या 'निर्देशन'। नीति का प्रयोग करते समय यह आवश्यक है कि राज्य की घरेलू तथा विदेश, नीति के निर्माण व संचालन में नैक नियति से काम लिया जाये । शुक्र के अनुसार – नीतिशास्त्र समाज के स्थायी एवम् विकास की एक अनिवार्य शर्त है तथा इस से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को चारों लक्ष्यों की प्राप्ति होती है ।

डॉ. जलारिया का कथन है कि– "राज-नीतिशास्त्र व्यवस्थित रूप से उन आधारभूत सिद्धान्त का निरूपण करता है जिसके अनुसार समष्टि रूप से राज्य का संगठन होता है और प्रभुसत्ता का प्रयोग किया जाता है ।

राजनैतिक चिन्तन : भारतीय परिप्रेक्ष्य –

भारत का राजनैतिक चिन्तन वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों से 'कल्हण' की 'राजतरंगिणी' तक फैला हुआ है। सन् 1905 में प्राप्त कौटिल्य

(चाणक्य) के 'अर्थशास्त्र' ने प्राचीन भारत में राजनीतिक चिन्तन के व्यवस्थित एवं परिष्कृत विकास को उजागर कर दिया। भारतीय राजनीतिक दर्शन में मानव की आध्यात्मिक प्रकृति को सर्वोच्च माना है। मानव को भारतीय चिन्तन एक ऐसे प्राणी का रूप दिया है, जिसमें सत्य रूपी परमात्मा का अंश उस की आत्मा के रूप में विराजमान है। राजनैतिक चिन्तन में पश्चिमी विचारधारों की प्रधानता रही है। जब कि भारतीय चिन्तन परिवेश एवं आवश्यकताओं अनुरूप विकसित हुआ ।

'भारतीय चिन्तन में सत्ता तथा पद दोनों का निश्चित का निश्चित स्वरूप उभरा है। सभी व्यक्ति अपने–अपने कार्यों के संदर्भ में समाज में अपना स्थान रखते हैं, जिसमें अधिकारों तथा कर्तव्य दोनों का प्रादुर्भाव होता है। भारतीय विचारधारा अधिकारों की तुलना में कर्तव्यों की प्रधानता में आस्था रखती है। भारतीय राजनैतिक चिन्तन में व्यक्ति को न केवल समाज तथा राज्य का अंग या सदस्य माना गया है, बल्कि अनेकानेक ऐच्छिक संस्थाओं के सदस्य के रूप में आंका गया है ।

भारतीय चिन्तन 'अनेकता में एकता'' के सिद्धान्त को साकार रूप प्रदान करता है। वैदिक, विश्वदृष्टि, उपनिषदों का दर्शन बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम मध्ययुगीन एवं आधुनिक भारत में अनेक भिन्नताओं के होते हुए भी व्यवहार, दायित्व, जाति, लौकिक प्रक्रिया, न्याय तथा राजा के सिद्धान्तों में पर्याप्त समानता एवं निरन्तरता पाई जाती है। अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भारतीय दृष्टिकोण व्यापक था तथा राजनैतिक विस्तार एवं संगठन से प्रेरित था। केवल "राजा" नहीं "चक्रवर्ती राजा" भारतीय राजनैतिक चिन्तन का मूल था । इसी पृष्ठभूमि में मगध, बिम्बसार और अशोक के साम्राज्यों की स्थापना हुई ।

चाणक्य का राजनीतिक चिन्तन –

'प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा की प्रसन्नता है। प्रजा के लिए जो कुछ भी लाभकारी है, उसमें उसका अपना भी लाभ है। **– चाणक्य**

एक अन्य स्थान पर कहा है– 'बल ही सत्ता है, अधिकार है। इन साधनों के द्वारा साध्य है प्रसन्नता।'

– चाणक्य

इस सम्बन्ध में सैलेटोर का कथन है– "जिस राज्य के पास सत्ता तथा अधिकार है, उसका एकमात्र उद्देश्य अपने प्रजा की प्रसन्नता में वृद्धि करना है । इस प्रकार चाणक्य ने एक कल्याणकारी राज्य के कार्यों को उचित रूप से निर्देशित किया है।'

चाणक्य (कौटिल्य) बड़े ही स्वाभिमानी तथा क्रोधी व्यक्ति थे। एक किंवदन्ती के अनुसार– एक बार मगध के राजा महानन्द ने श्राद्ध के अवसर पर कौटिल्य को अपमानित किया था। उन्होंने क्रोध के वशीभूत होकर अपनी शिखा खोल कर यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक वे नन्द वंश का नाश नहीं कर देंगे तब तक अपनी शिखा नहीं बाँधेंगे। चाणक्य के व्यावहारिक राजनीति प्रवेश करने का यह भी एक बड़ा कारण था। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा गद्दी पर आसीन होने के बाद उसे पराक्रमी बनाने और मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से उन्होंने व्यावहारिक राजनीति में प्रवेश किया और चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री भी बने ।

महानीतिज्ञ तथा मौर्य साम्राज्य का सर्वेसर्वा होते हुए भी चाणक्य (कौटिल्य) ने एक त्यागी, सन्यासी, राजनैतिक विचारक लेखक व व्याख्याकार का जीवन बिताया तथा विश्वविख्यात ग्रन्थ "अर्थशास्त्र" की रचना की। प्राचीन भारतीय विचारक महान कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ तथा मगध राज्य के भाग्य निर्माता कौटिल्य का नाम अर्थशास्त्र के प्रणेता के रूप में प्रसिद्ध है। कौटिल्य को चाणक्य व विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है। उनके समय में भारत अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था। कौटिल्य ने अपनी राजनीतिक व कूटनीतिक कुशलता व सूझ–बूझ से उन्हें एक सूत्र में बाँध कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना में योगदान दिया।

कौटिल्य के विश्वविख्यात ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' का प्रमुख विषय है– 'राजनीति' जिसके विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विवरण 15 अधिकरणों, 280 प्रकरणों, 150 अध्यायों तथा 6000 श्लोकों में किया गया है। इसमें राजनीति के अलावा दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अपराधशास्त्र, प्रव्रज्याशास्त्र, गुप्तचर शास्त्र, शिक्षा–शास्त्र, सैन्य शास्त्र, खान विद्या, भूगर्भ विज्ञान, रसायन शास्त्र इंजीनियरिंग तथा अनेक विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है।

चाणक्य का मानना था कि 'मानवमात्र का आधार पूँजी या अर्थ है। इसका अर्थ पृथ्वी से भी है, जिस पर लोग निवास करते हैं। उन्होंने शासन व्यवस्था के चार आधार माने हैं जो हैं– त्रयी (तीनों वेदों का ज्ञान), आन्वीक्षिकी (सांख्य, योग तथा लोकायत का ज्ञान), वार्ता (अर्थव्यवस्था तथा दण्डनीति)।

जिन विषयों का अर्थशास्त्र में विवेचन किया गया है, उनके संक्षिप्त विवरण से भारतीय राजनीतिक चिन्तन की व्यापकता का आसानी से आभास हो जाता है। इस में मुख्य वर्णित विषयों का तीन मुख्य भागों में वर्गीकरण निम्नलिखित है–

1. राजशाही का सिद्धान्त या बुद्धिमान राजा के कार्य व गतिविधियाँ।

2. प्रशासन तथा कानून के सिद्धान्त।

3. युद्ध एवं राजनय की समस्याएँ।

अर्थशास्त्र के प्रथम छठे एवं आठवें खण्ड में राजशाही के सिद्धान्त या बुद्धिमान राजा के कार्यों तथा गतिविधियों का का विस्तृत वर्णन किया गया है। खण्ड दो से पाँच में प्रशासन तथा कानून के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। दूसरे खण्ड में सरकारी अधिकारियों के गतिविधियों की चर्चा की गई है। इसमें देहातों के निर्माण से सम्बन्धित समस्यायें, भूमि के बटवारे, किले, आय–कोष, खानों, व्यापारिक संस्थानों एवं सोने का व्यापार, जंगल, संचार, मापतौल, चुंगी, खेती, सेना के विभागों (पैदल, घुड़सवार, रथ, हाथी), जासूसी तथा प्रशासन कोष की सम्पूर्ति, सरकारी कर्मचारियों की आजीविका तथा राज्य एकीकरण जैसे विषयों पर विचार किया गया है। तीसरे खण्ड में– नागरिक कानून सम्बन्धित, विवाह, उत्तराधिकार, कर्जों, जमा राशियों, दासी तथा श्रमिकों, स्वामित्व, मान–हानि तथा हमलों से सम्बन्धित मुद्दों पर विचार किया गया है। चौथे खण्ड में अपराधिक कानून, सिलिप्सियों तथा व्यापारियों के संरक्षण, राज्य पर आने वाली मुसीबतों से बचने के साधनों, अपराधियों को पकड़ने उन पर मुकदमा चलाने, उनसे सच उगलवाने के लिए उन्हें प्रताड़ित करने तथा उनके द्वारा कानूनों तथा रीति–रिवाज के उल्लंघन के लिए उनके अंग–भंग करने या मृत्युदण्ड के बदले जुर्माना आदि के विकल्प से सम्बन्धित विषयों का विस्तार से वर्णन है।

अर्थशास्त्र के सातवें खण्ड में मुख्य विषय का सम्बन्ध युद्ध तथा राजनय से है। राज्य की नीतियों को छः विभागों में बाँटा गया है– "शांति, युद्ध, उदासीनता, हमले की तैयारी, संधि या एक–दूसरे का संरक्षण, एक के साथ शान्ति, दूसरे के साथ युद्ध। नवें खण्ड में हमलावर की गतिविधियों का, शत्रु की शक्ति, स्थान, समय, सामर्थ्य, कमियाँ, हमले के समय भर्ती, युद्ध में संलग्न व्यक्तियों, शत्रुओं तथा वैकल्पिक रणनीतियों को अपनाने से मिलने वाले सफलता से सम्बन्धित विषयों का विवेचन किया गया है। दसवें खण्ड में युद्ध छावनियों, बीमारी तथा हमले की स्थिति में सैनिकों की रक्षा, धोखेबाजी से किये जाने वाले हमलों तथा सेना के विभिन्न दलों द्वारा उन का मुकाबला करने की प्रतिबद्धता से सम्बन्धित विषय का वर्णन है। ग्यारहवें खण्ड में गणतंत्रों का वर्णन है। इस खण्ड में ऐसे राज्यों के लिये संकट खड़े करने के तरीके बताये गये हैं।

गणतंत्रों के प्रति चाणक्य नीति–

गणतंत्रों से प्राप्त होने वाली सहायता, सेना, मित्र तथा लाभ से प्राप्त होने वाली सहायता से बेहतर है। समाधान तथा उपहार के साधनों के द्वारा विजय के इच्छुक राजा को उन गणतन्त्रों की सेवाएं व सहयोग प्राप्त करना चाहिए, जो शत्रु के लिए अजेय तथा उसके प्रशंसक हैं। लेकिन जो गणतंत्र उस के विरोधी हों उनमें से वैमनस्य के बीज बोने चाहिए तथा उन्हें चोरी छिपे दण्डित करना चाहिए।

बारहवें खण्ड में शत्रु के साथ सम्बन्ध होने पर समरयात्रों का वर्णन है। तेरहवें खण्ड में किले पर कब्जा करने के तरीकों, वैमनस्य के बीज बोने, गुप्त–कपट योजनाओं के द्वारा बालकों को प्रलोभित करना, राज्य की पुर्नस्थापना आदि का उल्लेख है। चौदहवें खण्ड में शत्रु से निपटने के लिए गुप्त शरारतपूर्ण, आकर्षक तथा भ्रम पैदा करने वाले तरीकों, शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाले तरीकों, साधनों, उपचारों आदि का विस्तृत वर्णन है। चौटिल्य (चाणक्य) का अर्थशास्त्र एक ऐसे मील स्तम्भ की तरह उभरा है, जिसकी मिसाल भारतीय व्यवस्था में तो क्या, पाश्चात्य जगत में नहीं मिलेगी। भारतीय विचारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को जानबूझ कर अनदेखी करके प्लेटो तथा अरस्तू की आदर्श राज्य व्यवस्था या मैक्यावली की कूटनीति के अध्ययन को प्राथमिकता देने की परिपाटी को अपनाया गया। इस ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया कि पश्चिमी विचारकों से बहुत पहले ही भारत के महान राजनीतिक विचारक तथा कूटनीतिज्ञ कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में एक सुव्यवस्थित राज्य की संरचना, शासक के गुणों तथा व्यवहारिक राजनीति का समन्वित तथा सजीव चित्रण कर लिया था।

चाणक्य के राजनीति तथा दण्डनीति के सिद्धान्त, ज्ञान की योजना पर आधारित हैं। इन के अनुसार ज्ञान या विद्या की चार शाखाएं हैं–

(1) त्रयी, (2) आन्वीक्षिकी, (3) वार्ता, (4) दण्डनीति।

त्रयी से तीनों वेदों का समावेश झलकता है। यह साहित्य, सामाजिक व्यवस्था को चार वर्णों तथा आन्वीक्षिकी में सांख्य की द्वैत, लोकमत, दार्शनिक व्यवस्था, योग तथा लोकायत के भौतिक दर्शन को शामिल मानते हैं। वार्ता में कृषि, पशुपालन तथा व्यापार सन्निहित है। दण्डनीति के क्षेत्र में साधनों का संग्रह, संरक्षण, संवर्धन तथा न्यायपूर्ण वेदों का अनुसरण एवं धर्मों का संचालन शामिल है।

चाणक्य के राजनैतिक चिन्तन में अवधारणायें व सिद्धान्त

धर्म तथा राजनैतिक सदाचार की अवधारणा–

चाणक्य (कौटिल्य) में स्वधर्म को महत्त्व दिया है। स्वधर्म के पालन से साम्राज्य का कल्याण होता है। हर व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करना चाहिए। उनके अनुसार– संस्थापक "जो राजा अपने साम्राज्य का प्रशासन धर्म, व्यवहार, इतिहास तथा राजशाही के अनुरूप संचालित करता है। वह चारों ओर से विश्व विजयी होता है। विश्व विजय के लिये राजा को साम, दाम दण्ड, भेद रूपी चार साधन सुझाए हैं।

व्यक्तिगत सदाचार –

चाणक्य के विचार से एक गुणवान राजा को धर्म का दृढ़ता से पालन करना चाहिए। राजा तथा उसके मंत्रियों का व्यवहार उच्चतम सदाचार का होना चाहिए, जिससे वह जनता के लिए एक आदर्श बन सके। राजा को अपने काम, क्रोध, लोभ व मोह जैसी लालसाओं राजनैतिक तौर पर नियन्त्रित रखना चाहिए।

राजनैतिक–सामाजिक सदाचार –

राजा को प्रजा रक्षा तथा प्रजापालन के अपने दोनों दायित्वों का सत्यनिष्ठा से निर्वाह करना चाहिए। प्रजा की भौतिक तथा आध्यात्मिक खुशी के लिये कार्य करना चाहिए। कृषि का विकास करना चाहिए। धंधा एवं व्यापार को प्रोत्साहन देना चाहिए। शिक्षा एवं विभिन्न कलाओं का विस्तार–विकास करना चाहिए तथा रोजगार के साधनों का सुसंचालन करना चाहिए। लोक–हितैषू एवं लोक–कल्याण के कार्य करना चाहिए। राजा को अपने सेवकों से प्रसन्न होकर उन्हें आहार की जगह (भूमि) देनी चाहिए।

आपदाधर्म का प्रावधान –

विरोधियों को समाप्त करने के लिए उनके बीच कलह कराई जाये, उन पर तरह–तरह के दोष लगाये जाएँ, उनको धोखे से शस्त्र द्वारा, जहर द्वारा अन्य किसी साधन से मरवा दिया जाए। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्वाचन में ऐसे अनेक अनैतिक उपायों का वर्णन किया गया है, जिनको अपनाकर शत्रु के खेमे में निराशा पैदा की जा सकती है। दुश्मन को धोखे से मारने के लिये अनेक उपायों का वर्णन किया गया है, जिनको अपनाना यद्यपि नैतिकता की दृष्टि से अनुचित है, किन्तु उन्हें एक कुशल राजनीतिज्ञ की विशेषता माना जाता है।

धर्म विजय की अवधारणा–

चाणक्य का मत था कि राजान अपने सद्गुणों का दुगुना विकास करे, पराजित राजा से स्वयं को अधिक श्रेष्ठ सिद्ध करके विजित जनता का विश्वास प्राप्त करे। विजित प्रजा को पूजा को करने में छूट दे। विद्वान तथा धार्मिक लोगों को भूमि दान दे। युद्ध में पकड़े गये कैदियों को रिहा कर के बालकों व जन्तुओं का वध न होने दें। वह न तो अधर्म के पथ पर चले और न ही अधार्मिक कार्यों को फैलने दें।

धार्मिक अनुष्ठान –

राजा का दर्जा सर्वव्यापी है और अपने राज्य के सभी लोगों की सेवा करना उस का धर्म है। राजा का आचरण सभी के जीवन को प्रभावित करता है। यदि राजा के व्यवहार में ईश्वर की प्रसन्नता झलकती है तो उस के साथ ही उस की अप्रसन्नता भी झलकती है। विधाता के अप्रसन्नता के आठ रूप– अग्नि, बाढ़, महामारी, अकाल, मूषक, शेर, सर्प तथा राक्षस से बचने के लिए धार्मिक अनुष्ठान तथा पूजा–अर्चना का परामर्श दिया है। राज्य के संरक्षण के लिये कुर्बानी देना राजा का धर्म माना गया है। उसे राज्य की उसी प्रकार रक्षा करनी चाहिए। जैसे– देवी–देवता मृत्यु को टालने के लिए करते हैं। यह सब वेदों के अध्ययन, सदाचरण, आध्यात्मिक शक्ति द्वारा हो जाएगा। इस के लिए कौटिल्य ने ब्राह्मणों तथा पुरोहितों के महात्म्य को स्वीकारा।

धर्म तथा दण्ड–

चाणक्य (कौटिल्य) ने धर्म को राजा तथा दण्डधर का पर्यायवाची माना। राजा कानून, न्याय कर्तव्य पालन व स्वधर्म का रक्षक होता है। अतः वह दण्ड या बल प्रयोग द्वारा प्रजा से उसके धर्म का पालन करा सकता है। धर्म नागरिक जीवन की आधारशिला है। सद्गुणों का स्रोत है। वह उन्हें सदाचार के लिए प्रेरित करता है। दण्ड व्यक्ति को सुसंचालित मार्ग प्रशस्त कर के समाज में प्रेरित करता

है। राज्य के सुसंचालन के लिये राजा को दण्ड का सहारा लेना ही पड़ता है। दण्ड के अभाव में राजा का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। न्याय तथा विधि को परमोत्कृष्ट प्रवृत्ति को स्वीकार करते हुए चाणक्य (कौटिल्य) राजा को न्याय का स्रोत मानते हैं। राजा धर्म, व्यवहार, चरित्र, संस्था तथा राजशासन को कानून के चार आधारभूत स्रोतों के रूप में देखता है। इससे वह विश्वविजय के लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होता है। चाणक्य का विचार है कि– 'धर्म के साथ प्रजा की रक्षा करना राजा का धर्म है। इसी से राजा को स्वर्ग की प्राप्ति होती है तथा दण्ड ही इस लोक तथा परलोक की रक्षा करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध –

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के कुछ सिद्धान्त उस समय आधुनिक मापदण्डों की दृष्टि से भी उत्कृष्ट थे। कौटिल्य की मान्यता थी कि विजय की आकांक्षा रखने वाले राज्य को चाहिए कि वह अपने दामन तथा अपने से बलवान् राज्यों से संधि कर ले, जिससे होने वाले आत्म–विनाश से बच सकें। अपने से हीन राज्यों को युद्ध हरा कर के अपने अधीन बना सकें।

मण्डल सिद्धान्त –

भारतीय राजतंत्र का एक प्रमुख सिद्धान्त 'मण्डल सिद्धान्त' के नाम से जाना जाता है। चाणक्य (कौटिल्य) ने अपने अर्थशास्त्र में इस सिद्धान्त, आदर्शों तथा वास्तविकता दोनों को ध्यान में रख कर इतना परिपूर्ण बनाया कि यह सभी युगों के लिए प्रासंगिक रहे। इसका तात्पर्य था विजय की इच्छा रखने वाले राज्य को कोशिश करनी चाहिए कि वह अपने शत्रुओं तथा उनके सहायकों अनुपात में हो। अपने मित्रों व सहायकों की संख्या में वृद्धि करे। राज्य की सुरक्षा एवं अस्तित्व बनाये रखने के लिए इसका चाणक्य ने वर्णन किया है।

राजनयिक या दूत की प्रथा–

राजनयिक या दूत को राज्य का 'मुख' कहा गया है। दूत वह व्यक्ति होता है जो शत्रु या मित्र राजाओं के यहाँ जाकर अपने राजा या राज्य का हित साधता है। वह राजाओं के साथ परस्पर वार्तालाप करने तथा उनके बीच सम्पर्क स्थापित करने का कार्य करता है।

गुप्तचर व्यवस्था –

गुप्तचर की तुलना राजा के आँखों से की गई है। वह राज्य के भीतर और बाहर दोनों ओर से शक्ति व सुरक्षा रखने का कार्य करते थे। चाणक्य (कौटिल्य) ने आन्तरिक सुरक्षा तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को मधुर तथा समुचित बनाने के लिए इस व्यवस्था का विवेचन किया है। कुछ गुप्तचरों का कार्य मात्र सूचना को संग्रह करना था, वहीं दूसरों का काम घृणा व वैमनस्य पैदा करना भी था। ज्योतिषी, पंडे, पुजारी भी इसी श्रेणी में आते हैं। गुप्तचर को चाहिये कि वह अपने स्वयं के सैनिक बल तथा भौतिक बल में वृद्धि कर के शत्रु पर आक्रमण कर दे और उसे युद्ध में पराजित कर दे। गुप्तचरों की अर्थव्यवस्था के लिये सांकेतिक लिपि का उल्लेख किया गया है।

चाणक्य नीति की वर्तमान में प्रासंगिकता –

आचार्य चाणक्य एक ऐसी महान विभूति थे, जिन्होंने अपनी विद्वत्ता और क्षमताओं के बल पर भारतीय इतिहास की धारा को बदल दिया। इतनी सदियाँ गुजरने के बाद आज भी यदि चाणक्य के द्वारा बताए गये सिद्धान्त और चिंतन तथा नीतियाँ प्रासंगिक हैं। यह इसलिये क्योंकि उन्होंने अपने गहन अध्ययन, चिन्तन और जीवनानुभवों से अर्जित अमूल्य ज्ञान को पूरी तरह निस्वार्थ हो कर मानवीय कल्याण के उद्देश्य अभिव्यक्त किया। वर्तमान दौर की सामाजिक संरचना, भूमण्डलीकृत अर्थव्यवस्था और शासन प्रशासन को सुचारु ढंग से चलाई गई नीतियाँ, सूत्र आत्यधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं। उन की नीति व चिन्तन के कुछ अंश निम्नलिखित हैं–

(1) जिस प्रकार सभी पर्वतों पर मणि नहीं मिलती, सभी हाथियों के मस्तक में मोती उत्पन्न नहीं होता, सभी वनों में चन्दन का वृक्ष नहीं होता, उसी प्रकार सज्जन पुरुष सभी जगह पर नहीं मिलते।

(2) झूठ बोलना, उतावलापन दिखलाना, दुस्साहस करना, छल–कपट करना, मूर्खतापूर्ण कार्य करना, निर्दयता सभी स्त्रियों के स्वाभाविक गुण हैं, पर वर्तमान दौर की शिक्षित स्त्रियों में इन दोषों को सही नहीं कहा जा सकता।

(3) भोजन के लिए अच्छे पदार्थों का उपलब्ध करना आदि सुख मनुष्यों को बहुत कठिनता से प्राप्त होते हैं।

(4) जिस व्यक्ति का पुत्र उसके नियंत्रण में रहता है, जिसकी पत्नी आज्ञा के अनुसार आचरण करती है, जो व्यक्ति अपने कमाये धन से पूरी तरह संतुष्ट रहता है। ऐसे मनुष्य के लिए यह संसार स्वर्ग के समान है।

(5) वही गृहस्थी सुखी है, जिस की संतान उसकी आज्ञा का पालन करती है, ऐसे व्यक्ति को मित्र नहीं कहा

जा सकता है, जिस पर विश्वास नहीं किया जा सके ।

(6) जो मित्र सामने चिकनी–चुपड़ी बात करता हो और पीठ पीछे आप के कार्य को बिगाड़ देते हों उसे त्याग देने में ही भलाई है। वह उस बर्तन के समान है, जिस के ऊपर के हिस्से में दूध लगा हो और अन्दर विष भरा हो।

(7) जिस प्रकार पत्नी के वियोग का दुख, अपने भाई–बन्धुओं से प्राप्त अपमान का दुख असहनीय होता है, उसी प्रकार कर्ज से दबा व्यक्ति भी हर समय दुखी रहता है। निर्धनता का अभिशाप मनुष्य की आत्मा को अन्दर ही अन्दर जलाती है।

(8) ब्राह्मणों का बल विद्या है, राजाओं का बल उसकी सेना है, वैश्यों का बल उनका धन है। शूद्रों का बल, दूसरों की सेवा करना है । राजा का कर्तव्य है कि सैनिकों द्वारा अपने बल को बढ़ाये, वैश्य व्यापार द्वारा धन बढ़ावे, शूद्र श्रेष्ठ लोगों की सेवा करे ।

(9) मूर्खता के समान यौवन दुःखदायी होता है, दूसरों पर आश्रित रहना अधिक कष्टदायक है।

(10) बचपन में संतान को जैसी शिक्षा दी जाती है, उसका विकास उसी प्रकार होता है। माता–पिता का कर्तव्य है कि वे उन्हें ऐसे मार्ग पर चलाएं जिससे उनके उत्तम चरित्र का विकास हो। गुणी व्यक्तियों से ही कुल की शोभा बढ़ती है ।

(11) वे माता–पिता अपने बच्चों के शत्रु समान है जो अपने बच्चों को शिक्षा नहीं देते। शिक्षाविहीन मनुष्य बिना पूँछ के जानवर जैसे होता है, अतः बच्चों को ऐसी शिक्षा दें, जिससे समाज को सुशोभित करे।

(12) अधिक लाड़–प्यार से बच्चे बिगड़ जाते है, उन्हें डाँटना भी आवश्यक है।

(13) मनुष्य का जन्म अत्यन्त सौभाग्य से मिलता है, अतः हमें अधिकाधिक समय वेद आदि के अध्ययन में बिताना चाहिए।

(14) यदि मित्र अच्छा नहीं है तो उस पर विश्वास न करें, पर अच्छे मित्र पर भी पूरा विश्वास नहीं करना चाहिए। यदि वह नाराज हो गया तो आप के राज खोल देगा।

(15) व्यक्ति को अपना भेद मन में रखना चाहिए। समय आने पर तन्मयता के साथ उसे पूरा सहयोग करना चाहिए ।

(16) नदी किनारे वृक्षों का जीवन अनिश्चित होता है, बाढ़ के समय किनारे के वृक्ष उजड़ जाते है। उसी तरह राजा के पास के पास अच्छी सलाह न देने वाला मंत्री बहुत समय तक सुरक्षित नहीं रह सकता है।

(17) जिस तरह धन समाप्त होने पर वैश्या मुँह मोड़ लेती है, इसी तरह शक्तिहीन होने पर प्रजा भी राजा से मुँह मोड़ लेती है।

(18) मनुष्य को बुरे चरित्र वालों तथा कुसंगति से बचना चाहिए।

(19) मित्रता बराबर वाले से करनी चाहिये। सरकारी नौकरी सर्वोत्तम होती है। व्यापार कुशलतापूर्वक करना चाहिए। कुशल स्त्री घर की शोभा होती है।

चाणक्य का मण्डल–सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक व्यवहारिक तथा सर्वकालिक चित्र प्रस्तुत करता है। यह सिद्धान्त केवल कौटिल्य के समय की राजनीति को ही चित्रित नहीं करता, बल्कि, आज की अन्तर्राष्ट्रीय–राजनीति, राज्यों के परस्पर समझौते तथा उन पर आधारित शक्ति संतुलन तथा शक्ति संगीकरण का बयान करता है। कौटिल्य (चाणक्य) ने दूतों के जिन कार्यों का अपने 'अर्थशास्त्र' में उल्लेख किया है, उसकी आज के समय दूतों द्वारा किये जाने वाले कर्मों से मिलान की जा सकती है। कौटिल्य काल और आज के समय दोनों ने ही अपने राज्यों की सीमाओं की रक्षा करना और उसकी राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता व अखण्डता बनाये रखना दूत का सर्वोपरि कार्य माना गया। आज का राजनय प्रचार–प्रसार के कारण विश्वव्यापी हो गया है, पर मूल नियम, सिद्धान्त, चाणक्य (कौटिल्य) के समय के ही हैं।

चाणक्य के अनुसार– हिमालय से लेकर भारतवर्ष को एक राष्ट्र अखण्ड के रूप में विदेशी से बचाने का प्रयास है / सांस्कृतिक दासता की रक्षा खण्ड–खण्ड में बँटे राष्ट्र आक्रान्ताओं से रक्षा करना है। पराजित मन, पराजित खण्डित राष्ट्र को संगठित करता है। विद्या मुक्ति का मार्ग दिखाती है। सोये हुए सुप्त सामर्थ्य को जागृत करो, जो राष्ट्र में है। जागृति लक्ष्य है। बलिदान पौरुष है। प्राणों में स्वतंत्रता का दीपक जलेगा, आन्दोलनकारियों को पराजित करेगा। राष्ट्र की सुरक्षा आज प्रश्न है। ये सीमायें अपनी हैं। राष्ट्र अपने जीवन मूल्यों के दायित्व को निभाने में सफल होगा। शिक्षक की सफलता राष्ट्र को सजग करेगी। शस्त्र व शास्त्र से पहले राष्ट्र खण्ड में विभाजित हुआ। व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज का एकीकरण ही राष्ट्र का कंटक हटा सकता है। राष्ट्र की वेदी पर आहुति देने में शिक्षक ही उत्तरदायी है ।

आज भी काश्मीर, पाकिस्तान, आतंकवाद से भारत राष्ट्र में समस्याएँ बनी हुई हैं। देश में 'मनरेगा' ग्रामों के उत्थान लिये कार्य कर रहा है।

उपसंहार –

चाणक्य का राजनीतिशास्त्र के निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्होंने राजनीति विज्ञान का लगभग पुर्ननिर्माण किया। कौटिल्य (चाणक्य) का अर्थशास्त्र राज्य सम्बन्धी सूचनाओं का भंडार है तथा उसमें राजनीति के लगभग सभी मौलिक तथा गौण सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है। डॉ. राधाकृष्ण चौधरी के अनुसार– "दण्डिन, धान, सामवेद, सूरी, मनु, याज्ञवल्क्य तथा कात्यायन जैसे अनेक पाश्चात्य भारतीय विचारकों को कौटिल्य के इस ग्रन्थ ने प्रभावित किया है।" डॉ. घोषाल मानते हैं कि महाभारत के राजधर्म के गुण चाणक्य के ग्रन्थ का आभास कराते हैं।

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में त्रयी, आन्वीक्षिकी वार्ता तथा दृष्टि नीति के परम्परागत विद्वान सिद्धान्तों को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का श्रेय भी चाणक्य को है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन में विदेश नीति के 6 परम्परागत रूपों, शासक को दण्ड नीति और जिन परिस्थितियों में उनका प्रयोग किया जाये उनका वर्णन भी चाणक्य की अनूठी देन है।

चाणक्य ने अतिवाद को छोड़ कर मध्यमार्ग को अपनाया और राजाओं, मंत्रियों, शासकों के लिए मार्गदर्शक का रूप 'अर्थशास्त्र' ग्रन्थ द्वारा दिया, जिससे राजनीतिक ज्ञान के भण्डार का महत्वपूर्ण विकास व विस्तार हुआ।

एम. पी. कृष्णराव ने भी कौटिल्य (चाणक्य) की रक्षा नीति की सराहना की कि एक अच्छी शासन – प्रशासन व्यवस्था को समाज कल्याण के अपने कर्तव्यों को लगातार तथा ईमानदारी से निभानी चाहिए। के. एम. पणिकर के अनुसार चाणक्य ने जिस व्यवस्था को अपने पूर्वजों से ग्रहण किया, उसे संजोए रखा तथा परिपक्वता के साथ शिखर तक पहुँचाया। इसका उपयोग मौर्य शासकों एवं हिन्दू राजाओं ने, मुस्लिम शासकों तथा ब्रिटिश शासक ने ग्रहण किया।

भारतीय शासन–प्रशासन के विश्लेषणात्मक अध्ययन से विदित होगा कि चाणक्य के सिद्धान्तों तथा नीतियों को किसी न किसी रूप में सदा अपनाया गया तथा आज भी अपनाया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं राजनय का आज भी संचालन चाणक्य के वैज्ञानिक राजतंत्र के सिद्धान्त से प्रेरित है।

सम्राट अशोक के चक्र पर आज भारतीय गणतन्त्र का राजचिन्ह है। चाणक्य अशोक के धर्मशास्त्र के मसीहा थे। उन्होंने बदलते परिस्थितियों, सिद्धांतों, राजनीतिक आदर्शों को सर्वकालिक बनाने की चेष्टा की जिससे उनका और उनके ग्रन्थ का राजनीति में चिरस्थायी योगदान रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौधरी, राधाकृष्ण – कौटिल्याज पॉलिटिकल आइडियल एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स।
2. शामशास्त्री, आर, संपादक–अर्थशास्त्र : चाणक्य नीति, 1994।
3. प्रसाद, चन्द्रदेव – महान राजनीतिक विचारक : कौटिल्य, 1988।
4. रमरतन तथा त्यागी, रुचि – भारतीय राजनीतिक चिन्तन, नोएडा, उत्तर प्रदेश–1989।
5. वही, पृष्ठ 6।
6. वही, पृष्ठ 12।
7. वही, पृष्ठ 19।
8. वही, पृष्ठ 21।
9. वही, पृष्ठ 41।
10. वही, पृष्ठ 42।
11. वही, पृष्ठ 43।
12. वही, पृष्ठ 44।
13. वही, पृष्ठ 60।
14. वही, पृष्ठ 62।
15. वही, पृष्ठ 64।
16. वही, पृष्ठ 66।
17. वही, पृष्ठ 68।
18. वही, पृष्ठ 69।
19. वही, पृष्ठ 70।
20. वही, पृष्ठ 72।
21. वही, पृष्ठ 73।
22. वही, पृष्ठ 81।
23. वही, पृष्ठ 83।
24. वही, पृष्ठ 96।
25. वही, पृष्ठ 97।
26. वही, पृष्ठ 98।
27. Chanakya niti abp news- 28 Aug, 2016.
28. Wikipedia.
29. https://hi.m.wikipedia
30. www-google-co-in/com/j
31. Religion.bhaskar.com/chankayaneet
32. भूषण विज्ञान, अनुवाद– चाणक्य नीति वेबदुनिया।
33. Sol.du-ac-in/mod/book/google.
34. राजनीति विज्ञान – वाइकमारपीडिया।